इकाई 12 एलेक्सिस डि टॉकविल

इकाई की रूपरेखा

12.1 प्रस्तावना
12.2 लोकतंत्र, क्रांति और आधुनिक राज्य के संबंध में
12.3 धर्म
12.4 नारी और परिवार
12.5 उपसंहार
12.6 सारांश
12.7 अभ्यास

12.1 प्रस्तावना

शैल्डन वोलिन ने संकेत किया है कि अमेरिकी राजनीतिक सिद्धांत में "दी फेडरलिस्ट पेपर्स'' (1787-88) और "डेमोक्रेसी इन एमेरिका" नामक दो गौरवपूर्ण रचनाएँ हैं। इनमें से पहली रचना अमेरिकी गणराज्य के संस्थापक पूर्वजों के चिंतन का प्रतिनिधित्व करती है जबकि दूसरी रचना का उपयोग प्रायः "वर्तमान अमेरिकी राजनीति की व्याख्या के समर्थन में किया जाता है" (वोलिन 2001 : 3)। "डेमोक्रेसी इन एमेरिका" का लेखक चार्ल्स-एलेक्सिस हेनरी क्लेरेल डि टॉकविल (1805-59) 19वीं शताब्दी का सर्वाधिक काल्पनिक फ्रांसीसी राजनीतिक सिद्धांतवादी, समाजवादी और इतिहासकार था। उसकी रचनाओं से एक इतिहासकार, राजनीति-विज्ञानी और समाजशास्त्री की यह चिंता प्रकट होती है कि इन्हें कैसे श्रेणीबद्ध किया जाए। टॉकविल लोकतंत्रीय समाज के भविष्य के बारे में चिंतित था और वह उन उग्र सामाजिक परिवर्तनों के प्रति सजग था जो उसके समय में हुए और उनका जो प्रभाव समाज पर पड़ा। उसने लोकतंत्र के ऐसे प्रयाण को देखा जो सभी दिशाओं में - चाहे वह कानूनी हो, या राजनीतिक, सामाजिक हो, या आर्थिक - इतनी तेजी से गतिशील था और जिसे रोकना संभव नहीं था।

टॉकविल ने अपने मित्र गुस्ताव डि ब्यूमांट (1802-65) के साथ 1831 में अमेरिका की लोकतंत्रीय संस्थाओं के अध्ययन के लिए अमेरिका की यात्रा की। उसका उद्देश्य फ्रांस के लिए वहाँ से कुछ सीख लेना था। उसने दो खंडों में "डेमोक्रेसी इन एमेरिका" शीर्षक से एक पुस्तक की रचना की। उसने संघीय संविधान, जनता की संप्रभुता, संविधान की भूमिका का विश्लेषण किया और बहुसंख्यक समुदाय के निरंकुश शासन की चेतावनी दी। यह ऐसा विषय था जिसे बाद में जॉन स्टुअर्ट मिल (1806-73) ने विकसित किया। उससे एक नई सार्वभौम प्रवृत्ति को समझने में मदद मिली जिसे हम समानता की इच्छा, व्यक्ति की स्वतंत्रता और लोकतंत्र के साथ उसके जटिल संबंध के रूप में समझ सकते हैं। उसने स्थानीय स्वायत्त शासन, विकेंद्रीकृत प्रशासन, संपत्ति के व्यापक स्वामित्व और राजनीतिक स्वतंत्रता, सरकार की स्थिरता और बहुसंख्यक वर्ग की निरंकुशता से सुरक्षा के लिए स्वैच्छिक संगठनों की स्थापना की महत्ता पर बल दिया। चार्ल्स-लुई डि सेकांडेत मॉन्टेस्क्यू (1689-1755) की तरह उसने इंगलैंड की राजनीतिक संस्थाओं और इंगलिश अभिजात-तंत्र की प्रशंसा की।

फ्रांस की तुलना में इंगलैंड का अभिजात तंत्र निरंतर अपना नवीकरण करता रहा और वह अपनी राजनीतिक बुद्धिमत्ता तथा अनुभव के द्वारा अपने प्राधिकार को लागू करने की स्थिति में रहा। वह अपने समय में होने वाले महत्वपूर्ण परिवर्तनों को अनुभव कर सका। इसीलिए उसने इसे एक युग का अंत और नए युग का आरंभ कहा। मॉन्टेस्क्यू और टॉकविल दोनों ने विभिन्न प्रकार की सरकारों के गुण-दोषों का विश्लेषण किया। उसने यह विश्लेषण अमूर्त और कालातीत दृष्टि से नहीं किया बल्कि ऐतिहासिक, राजनीतिक और सामाजिक संदर्भों में किया।

जॉन स्टुअर्ट मिल के अनुसार टॉकविल पहला व्यक्ति था जिसने लोकतंत्र और इसकी कार्य-प्रणाली के बारे में इस आशा और विश्वास के साथ लिखा कि यह एक व्यवहार्य राजनीतिक पद्धति बन सकती है। अभिजातवर्गीय टॉकविल अमेरिकी लोकतंत्र के बारे में पढ़ने और लिखने से उदारवादी बन गया। उसके विचार में स्वाधीनता या आजादी का एक मूलभूत राजनीतिक मूल्य है जिसे राजनीतिक लोकतंत्र और सामाजिक समानता के सम्मिश्रण से भयंकर खतरा है। (वोलिन 201 : 8) "डेमोक्रेसी इन एमेरिका" नामक ग्रंथ को लोकतंत्र के बारे में लिखे गए ग्रंथों में सर्वोत्कृष्ट माना जाता है और "यह अमेरिका के बारे में अब तक लिखे गए ग्रंथों में से भी सर्वोत्कृष्ट है।" (मैन्सफील्ड एंड विनथ्रॉप 2000 : xvii) टॉकविल के अनुसार अमेरिका "महान लोकतंत्रीय क्रांति" का मुखिया था और इससे यूरोप में पूर्ण समानता की ऐसी स्थिति पैदा हो जाएगी जैसी नए विश्व में विद्यमान थी। उसका उद्देश्य न केवल राजनीति पर बल्कि "नागरिक समाज में लोगों के स्वभावों, विचारों और रीति-रिवाज़ों पर लोकतंत्रीय सामाजिक स्थितियों के प्रभाव का वर्णन करना था।" उसका विचार था कि यूरोप को अमेरिकी राजनीतिक संस्थाओं की नकल करने की आवश्यकता नहीं है लेकिन उसने इस बात पर बल दिया कि अमेरिका के बारे में अध्ययन से प्राप्त सूचनाओं से यूरोप को लाभ होगा।

टॉकविल की रचनाओं के विश्लेषण से हम यह निष्कर्ष नहीं निकाल सकते कि वह अभिजातवर्गीय प्रतिक्रियावादी था। कर्टिस (1910) ने उसे अभिजातवर्गीय रूढ़िवादी कहा, जबकि किर्क (1960) ने एडमंड बर्क (1729-97) की परंपरा में उसे उदार रूढ़िवादी कहा। टॉकविल की रचनाओं में हमें उदारवादी और रूढ़िवादी, दोनों आयाम दिखाई देते हैं। स्वतंत्रता और इसकी सुरक्षा के लिए ललक तथा संपत्ति के अधिकारों की सुरक्षा इसकी उदारवादी प्रवृत्तियों को दर्शाते हैं। और एक रूढ़िवादी या अनुदारवादी के रूप में वह पहला व्यक्ति था जिसने अति-लोकतंत्र के खतरों के खिलाफ आगाह किया।

12.2 लोकतंत्र, क्रांति और आधुनिक राज्य के संबंध में

टॉकविल ने स्वीकार किया कि यहाँ स्वस्थ अभिजात-तंत्र का अस्तित्व रहा है। परंतु निरंकुश राजाओं की नीतियों में फ्रांस के भूस्वामी कुलीन वर्ग को कम महत्व दिया गया। इन राजाओं ने सरकारी तंत्र का केंद्रीकरण कर दिया और प्राचीन अभिजात वर्ग को प्रांतीय प्रशासन से बाहर कर दिया। अभिजात वर्ग के अपने विशेषाधिकार थे, लेकिन उसके कर्तव्य और अधिकारों में कोई संबंध नहीं था। टॉकविल ने सामाजिक वर्गों के बीच स्वतंत्रता और दायित्व के संबंध को निर्णायक महत्व का माना। वह प्रायः फ्रांस के कुलीन वर्ग की तुलना इंगलैंड के अभिजात वर्ग से किया करता था। और वह इंगलैंड के अभिजात वर्ग की उसके मर्यादित और विनम्र स्वरूप के कारण प्रशंसा करता था। इस कारण से उसे पूरी उन्नीसवीं शताब्दी में स्थानीय प्रशासन और राजनीति में भाग लेने दिया जाता रहा। टॉकविल ने आयरलैंड के अभिजात वर्ग की भी समान रूप से और सामान्यतः उन अनुपस्थित भूस्वामियों की

आलोचना की जो अपने काश्तकारों की दशा के प्रति बेखबर रहते थे। उसने यह निष्कर्ष निकाला कि यदि एक बार अभिजात वर्ग को हटा दिया जाए तो उसे पुनः स्थापित नहीं किया जा सकता।

यद्यपि टॉकविल क्रांति को पसंद नहीं करता था, फिर भी इस विषय में उसने संतुलित विचार व्यक्त किए। उसने माना कि "एक बड़ी क्रांति के द्वारा किसी देश में स्वाधीनता स्थापित हो सकती है, लेकिन एक के बाद एक कई क्रांतियों से बहुत समय तक वहाँ व्यवस्थित स्वाधीनता असंभव हो जाती है।" (टॉकविल 1955 : 72) उसने फ्रांसीसी क्रांति के आतंक और निरंकुशता के शासन को पसंद नहीं किया। हमारे अर्थशास्त्रियों को अतीत के प्रति बहुत अधिक घृणा थी। लेट्रोन ने यह घोषणा की कि "राष्ट्र का शासन एकदम गलत ढंग से किया गया था, जिसे देखकर ऐसा आभास होता है कि सब कुछ भाग्य के भरोसे छोड़ दिया गया था।" इस अवधारणा से आरंभ करके उन्होंने फ्रांस की किसी भी संस्था को नहीं छोड़ा - चाहे वह कितनी भी आदरणीय और सुस्थापित क्यों न रही हो और उसे तत्काल समाप्त करने के लिए उन्होंने आंदोलन किया, क्योंकि वह उनकी सरकार की व्यवस्थित योजना में पूरी तरह से ठीक नहीं बैठती थी।

जब हम फ्रांस की क्रांति का निकट से अध्ययन करते हैं तो हम देखते हैं कि इसका संचालन लगभग उसी भावना से किया गया था जिसके परिणामस्वरूप बहुत-सी पुस्तकें लिखी गईं। इन पुस्तकों में सरकार के अमूर्त रूप से संबंधित विभिन्न सिद्धांतों का प्रतिपादन किया गया था। हमारे क्रांतिकारियों को भी व्यापक सामान्यीकरण करने की पहले से तैयार विधान तंत्र की और पांडित्यपूर्ण सममिति (symmetry) करने की वैसी ही प्रवृत्ति थी, उनमें अकाट्य तथ्यों के प्रति वैसा ही उपेक्षा भाव था, उन्हें संस्थाओं को नए, उत्तम ढंग से मौलिक रूप में पुनर्गठित करने की वैसी ही रुचि थी, उन्हें किसी तंत्र के दोषयुक्त अंशों का सुधार करने के बजाय पूरे तंत्र का पुनर्निर्माण करने की भी वैसी ही इच्छा थी। (टॉकविल 1955 : 159, 147) बर्क की तरह उसने फ्रांस की क्रांति की पूर्ण रूप से आलोचना नहीं की क्योंकि वह उनकी स्वतंत्रता और समानता के प्रति प्रतिबद्धता का समर्थक था। परंतु उसने क्रांति के बाद आत्यंतिक समानता, स्वतंत्रता के महत्व और मानव की महानता को कम आँकने का समर्थन नहीं किया।

यद्यपि उसने अपने-आपको अपनी मूल प्रवृत्ति के कारण अभिजातवर्गीय घोषित किया, जो जन-समूह से डरता और उससे घृणा करता था। वह अपने वर्ग की पराजय को अनिवार्य समझ कर उसे स्वीकार करने को तैयार था। उसने अपने युग का एक नए युग के रूप में वर्णन किया जिसकी विशेषता समानता की इच्छा थी। यह एक ऐसी चेष्टा थी जो बहुत प्रबल, अपूरणीय, निरंतर और अजेय थी। उसकी दृष्टि में अमेरिका इस सार्वभौम प्रवृत्ति का प्रतीक था। उसे इस बात की चिंता थी कि समानता की यह ललक एकरूपता लाएगी जिससे अंततः स्वाधीनता नष्ट हो जाएगी। जनता की राय की शक्ति से वैयक्तिकता के बजाय अनुरूपता, उत्कृष्टता के बजाय सामान्यता और अध्यात्मवाद के बजाय भौतिकवाद की उत्पत्ति होती है।

टॉकविल ने देखा कि अमेरिका में कानून के शासन के प्रति व्यापक स्तर पर आदर का भाव था, जबकि फ्रांस में निरंकुश शासन ने कानून के प्रति तिरस्कार की भावना को प्रोत्साहित किया। अमेरिका और इंगलैंड में स्थानीय स्वायत्त संस्थाएँ मज़बूत थीं जबकि फ्रांस में राजा द्वारा नगरपालिका के कार्यालयों की बिक्री से इन संस्थाओं की परंपरा कमज़ोर हुई। अमेरिका में लोग संघों और समूहों का गठन करते थे जबकि फ्रांस में व्यक्तिवाद और केंद्रीय सरकार की सर्वज्ञता पर निर्भरता अत्यधिक सशक्त थी। अमेरिका में चुने हुए मुख्य कार्यकारी अधिकारी से किसी प्रकार का भय नहीं होता क्योंकि संविधान

न केवल सरकार की शक्ति को सीमित करता है बल्कि वहाँ ज्यादती को रोकने के लिए व्यापक व्यवस्था है। इसके विरुद्ध फ्रांस में केंद्रीकृत शक्ति और शक्तिहीन विधानसभा की सुस्थापित परंपरा के कारण कार्यपालिका का चुना हुआ अध्यक्ष स्वतंत्रता के लिए ख़तरा था।

एक समाजशास्त्री के रूप में टॉकविल ने समाज की प्रकृति में रुचि ली और उसने आधुनिक संबंधों की संविदागत प्रकृति की ओर संकेत किया जिसमें नैतिक दायित्व या मानवीय प्रेम का कोई स्थान नहीं था। उसने राज्य की भूमिका को इस रूप में समझा जो विभिन्न सामाजिक वर्गों के विशेष हितों को एक राजनीतिक निकाय में जोड़ने का काम करेगा। यदि राज्य के अस्तित्व को चिरस्थायी बनाना है तो उसे पर्याप्त और न्यायसंगत कराधान प्रणाली की आवश्यकता पर विचार करना होगा। आधुनिक राज्य का आर्थिक आधार तैयार करने की उसकी अंतर्दृष्टि उसे निरकुंशतावादी राज्य के स्वरूप का बुद्धिमत्तापूर्वक विश्लेषण करने में समर्थ बनाती है। उसने अपनी रचना "ल' एन्सिएन रेजिमे ऐट ला रेवोल्यूशन" (L'ancien regime et la Revolution) (**1856**) में करों और सेवाओं के अनुचित ढंग से विभिन्न वर्गों में वितरण की विस्तार से चर्चा की है जिसमें इनका ज्यादा भार कृषक वर्ग को उठाना पड़ा। निरंकुशतावादी राज्य बनाना तभी संभव हुआ जब राजा ने स्वयं को राज्य या संसद जैसी संवैधानिक संस्थाओं से स्वतंत्र कर लिया ताकि वह अपनी सेना और घरेलू परियोजनाओं के लिए कर लगाकर धन जुटा सके।

टॉकविल लोकतंत्र के विस्तार के बारे में सावधान था। उसकी समझ में लोकतंत्र का मतलब राजनीति में और अधिक भागीदारी तथा नागरिक और सामाजिक समानता था। विशेषाधिकारों को रद्द करना एक प्रकार से समतावादी समाज के सृजन की अपरिहार्य प्रवृत्ति का साधन था। इस परिवर्तन के परिणाम महत्वपूर्ण थे। सामाजिक बाधा को हटाने से नए-नए परिवर्तन हुए। इसका यह भी अभिप्राय है कि सामाजिक ढाँचे में सतत परिवर्तन हुए और इसके पूर्ववर्तियों के विपरीत, जैसा कि लोकतंत्रीय समाज में होता है, वहाँ प्राकृतिक नेताओं का अभाव होगा। व्यक्तियों को अपने विशेषाधिकारों की अपेक्षा अपने हितों के आधार पर राजनीतिक पदों के लिए संघर्ष करना होगा। समानता के प्रति उत्साह का परिणाम सामाजिक समीकरण होगा जिससे मनुष्य मात्र में यदि कोई भेदभाव है तो वह समाप्त हो जाएगा। समानता से जनमत के ऊपर शक्ति प्राप्त होती है। इसका मतलब है कि गली के औसत आदमी का शासन। उसने कहा कि समान सामाजिक स्थितियों का परिणाम या तो "सर्वसंप्रभुता" या "एक व्यक्ति की निरंकुश सत्ता" हो सकता है। उसने भागीदारी वाली राजनीतिक संस्थाओं को प्रोत्साहन देने में समानता के सिद्धांत में अंतर्हित तानाशाही प्रवृत्तियों को रोकने का मूल मंत्र देखा। टॉकविल का समानता की अपरिहार्य प्रगति का विचार आधुनिकीकीकरण के समकालीन विचार के समान था। यह एक ऐसी ऐतिहासिक प्रक्रिया है जो सभी परंपरागत या आभिजात्य राजनीतिक व्यवस्था को क्षति पहुँचाएगी जिसका परिणाम लोकतंत्रीय स्वायत्त प्रशासन नहीं होगा। (फुकुयामा 2000 : 11-17)

टॉकविल ने स्वाधीनता को परिभाषित करते हुए कहा - इसे बाहरी राजनीतिक प्रतिबंध का अभाव कहा जा सकता है। वह समानता पर अत्यधिक बल देने के बारे में सशंक और आशंकित रहा। उसने "बहुसंख्यक वर्ग की तानाशाही" के खतरे पर भी ध्यान दिया, जिसकी अभिव्यक्ति व्यक्ति की असहिष्णुता के सामाजिक मानकों से विचलन के रूप में होती है। वह समानता की ओर हुई अपरिहार्य प्रगति को स्वीकार करने में पर्याप्त यथार्थवादी रहा और उसने समानता के साथ स्वतंत्रता का सामंजस्य स्थापित करने का प्रयास किया। उसका राजनीतिक आदर्श कानून के शासन के अंतर्गत स्वतंत्रता थी। उसका आग्रह था कि लोगों का गतिशील स्थानीय सरकार और स्वतंत्र संघों के द्वारा अपने मामलों पर यथासंभव सीधा नियंत्रण होना चाहिए जो सामंतवाद के अधीन विकेंद्रीकरण से कुछ

भिन्न प्रकार का था। थॉमस जेफर्सन (1743-1826) की तरह वह केंद्रीय प्राधिकार के मनमाने ढंग से हस्तक्षेप को और राज्य में क्रांतिकारी विद्रोह को रोकने के लिए सशक्त स्थानीय संस्थाओं के पक्ष में था। यह ऐसा पहलू था जिसे बीसवीं शताब्दी की अंतिम तिमाही में गैर-अनुदारवादियों ने संयुक्त राज्य अमेरिका में पुनर्जीवित किया था।

जेम्स मैडिसन (1751-1836) की तरह टॉकविल अमेरिका में बहुसंख्यक वर्ग की तानाशाही का मतलब समुदाय में बहुसंख्यक वर्ग और अल्पसंख्यक वर्ग में स्थायी विभाजन नहीं मानता था। वह इसे उन नागरिकों का व्यापक मतैक्य मानता था, जिन्होंने शायद ही कभी ऐसा समझा हो कि बहुसख्यंक वर्ग द्वारा बनाए गए कानून मनमाने, अन्यायपूर्ण और पीड़ादायक हैं। समान राजनीतिक अधिकारों और राजनीतिक प्रक्रिया में व्यक्तियों की सक्रिय भागीदारी ने उन्हें "वहाँ के कानूनों के प्रति समान प्यार और आदर दिया जिन कानूनों का वे स्वयं को निर्माता समझते थे।" (टॉकविल 1966 क : 9) राजनीतिक समानता के अलावा वहाँ सामाजिक समानता भी थी। यह इतनी व्यापक थी कि इसने बहुसंख्यक वर्ग के शासन के विचार को मज़बूत किया। उसने एकरूपता के मुद्दे की ओर भी संकेत किया और उसे अमेरिकी जीवन के अप्रिय पहलुओं में से एक माना। उसने यह अनुभव किया कि यूरोप से भिन्न अमेरिका में केवल एक ही समाज था। "वह समाज या तो अमीर था या गरीब, सामान्य था या बहुत प्रतिभाशाली, व्यापारी था या कृषिजीवी परंतु वह सर्वत्र एक ही तत्व का बना था। सारे देश में एक प्रकार की सभ्यता थी। जिस व्यक्ति को हम न्यूयॉर्क में छोड़ आए थे वही अन्य भागों में मिलता है। उसके वही वस्त्र, सोचने का वही ढंग, वही भाषा, वैसी ही आदतें और वही आमोद-प्रमोद।" (टॉकविल : वही 151) टॉकविल ने इस अद्भुत एकरूपता को समानता की भावना के रूप में देखा जिसने वहाँ के सामुदायिक जीवन की स्थिरता को संभव बनाया। एकरूपता की यह समस्या राजनीतिक नहीं थी। शायद ही कभी सरकार या कानूनों का उपयोग (किसी वर्ग के) दमन या उत्पीड़न के लिए किया जाता हो क्योंकि वहाँ नागरिकों का कोई ऐसा विशिष्ट या अलग वर्ग नहीं है जिसके उत्पीड़न या दमन की आवश्यकता हो। न ही वहाँ बहुसंख्यक वर्ग का शासन आधिपत्य और निरंकुशता का स्रोत था। इसके बजाय यह ध्यान रखा जाता था कि समुदाय के अंदर किसी प्रकार के आधारभूत मतभेद पैदा न हों। टॉकविल को इस बात की आशंका थी कि अमेरिकी जनमत की नैतिक शक्ति न केवल लोगों के क्रियाकलापों को विनियमित करती है अपितु वह उनके स्वभाव को भी ढालती है। उसने यह भी देखा कि वहाँ की इतनी अधिक एकरूपता यह संकेत करती है कि जैसे बहुसंख्यक वर्ग की भावना किसी सामान्य अभिमत को व्यक्त करने के लिए एकाकार हो गई हो। लेकिन इस प्रकार की एकरूपता और सामंजस्य स्वैच्छिक तानाशाही की ओर संकेत करती है। एकरूपता के अलावा वहाँ अत्यधिक अलगाव तथा दूसरों पर निर्भरता पाई जाती है जिसने मानसिक अवपीड़न को संभव बना दिया और इसके द्वारा समतावादी समुदाय में अंतर्हित एकरूपता को दृढ़ किया। उसने यह भी देखा कि राजनीतिक चिंतन की पुरानी अवधारणाएँ राज्य के नए विषयों का समाधान करने के लिए उपयुक्त नहीं हैं। तानाशाही के परंपरागत रूपों के विरुद्ध (जो राजनीतिक अवपीड़न के द्वारा जनता को उत्पीड़ित करती थी) इसका जो नया रूप है वह न तो राजनीतिक है और न ही प्रत्यक्ष रूप से दमनकारी है। इसका स्वरूप सामाजिक है। जॉन स्टुअर्ट मिल ने इस पर्यवेक्षण पर ध्यान दिया और उसने व्यक्तित्व की स्वतंत्रता को अपनी युक्तियों में जोड़ लिया जो उसके "ऑन लिबर्टी" (1859) नामक ग्रंथ में बहुसंख्यक वर्ग के आधिपत्य और समतावाद की समीक्षा में दी गई थीं। मिल का विश्वास था यदि लोगों की लोकतंत्र के बारे में सही धारणा हो तो बहुसंख्यक वर्ग की जिस तानाशाही के बारे में टॉकविल ने चेतावनी दी थी उसे कम किया जा सकता है। टॉकविल के विरुद्ध मिल आशावादी था। उसका विचार था कि यदि उत्कृष्ट प्रवृत्ति के लोग लोकतंत्र के आधिपत्य को सुनिश्चित कर लें और यदि लोकतंत्र के साथ जन-प्रतिनिधित्व का बल हो तो वह प्रतिभा और सांस्कृतिक वंचन के भ्रष्ट आचरण को प्रेरित करने का

खतरा नहीं उठाएगा। प्रतिनिधित्व-युक्त लोकतंत्र ऐसे स्वतंत्र समाज को सुनिश्चित करेगा जिसमें प्रभुत्वपूर्ण शक्ति का अभाव होगा। टॉकविल ने अभिजात वर्ग की सराहना की जबकि इसके विपरीत मिल ने इसे सभ्यता की प्रगति के लिए खतरा माना।

मॉन्टेस्क्यू की तरह टॉकविल ने वाणिज्य को बढ़ती हुई सामाजिक समानता और व्यक्ति की स्वतंत्रता के समुचित विकास के लिए अनिवार्य माना। परंतु उसने बेलगाम भौतिकवाद के विनाशकारी पहलू और अत्यधिक आर्थिक असमानता के खतरे को भी अनुभव किया। उसने लोकतंत्र और समानता के बीच संबंध के दोहरे खतरों की ओर भी संकेत किया जिसका परिणाम "बहुसंख्यक वर्ग की तानाशाही" होगा और क्या लोकतंत्र पूँजीवाद के विकास में अंतर्हित सशक्त असमतावादी प्रवृत्ति को नियंत्रित करने में समर्थ होगा।

टॉकविल ने दासता को न केवल अमानवीय बताया बल्कि उसे गुलामों के मालिकों के प्रबुद्ध स्वार्थों का विरोधी भी बताया। उसने जोसेफ़-आर्थर गोबिन्यू (1816-82) के जातीय क्रम परंपरा के विचार को अस्वीकार कर दिया और अमेरिका के दासता उन्मूलन विरोधी नेताओं की तरह कहा कि काले लोग दूसरे लोगों से भिन्न और घटिया नस्ल के हैं और इस विचार को दबा दिया कि ऐंग्लो-सेक्सन जाति ह्रासोन्मुख है। उसने इस धारणा को कुछ खास जातियों के विरुद्ध दुरुपयोग के प्रति आगाह किया। उसने जातीय क्रम परंपरा को एक अन्य प्रकार का अभिजात वर्ग कहा जिसकी लोकतंत्र और सामाजिक समानता के आक्रमण से ध्वस्त होने की संभावना है।

12.3 धर्म

निकोलो मैक्यावली (1469-1527) की रचनाओं में यह सोदाहरण प्रतिपादित किया गया है कि सोलहवीं शताब्दी यूरोप में पंथनिरपेक्ष नीतियों के श्रीगणेश का समय है। यद्यपि मैक्यावली चर्च-विरोधी और पादरी-विरोधी था लेकिन वह धर्म को व्यक्ति के सामाजिक जीवन के लिए और राज्य के स्वास्थ्य तथा समृद्धि के लिए आवश्यक समझता था। अच्छे कानूनों और सु-अनुशासित नागरिक सेना के साथ धर्म से व्यवस्था स्थापित होती है जिससे शांति, सौभाग्य और सफलता प्राप्त होती है। एक सामाजिक शक्ति के रूप में धर्म महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है क्योंकि इसके "पुरस्कार और सजा" के सिद्धांत के द्वारा समाज के कल्याण के लिए आवश्यक सद्व्यवहार और सदाचरण की प्रेरणा मिलती है। मैक्यावली ने यह तो माना कि धर्म सामाजिक दृष्टि से उपयोगी है लेकिन वह धर्म के स्वतंत्रता के साथ मूलभूत संबंध को नहीं समझ सका। यह ऐसा विषय था जिसे टॉकविल ने धर्म-विरोधी होते हुए भी तर्क और स्वाधीनता का समर्थन करने के लिए मुख्य धारा के परंपरा और प्राधिकार संबंधी धर्मसार के विरोध में संक्षेप में विकसित किया।

टाकविल की उल्लेखनीय मौलिकता, अमेरिका में लोकतंत्र को सुदृढ़ करने में धर्म की अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका को स्वीकार करने में है। उसने धर्म को एक "राजनीतिक संस्था" माना जिसका लोकतंत्रीय समाज में स्वतंत्रता के संरक्षण के लिए और विशेष रूप से स्थितियों की समानता से उत्पन्न तानाशाही प्रवृत्तियों से सुरक्षा के लिए विशेष महत्व है। उसने अनुभव किया कि "तानाशाही धर्म के बिना शासन चला सकती है लेकिन स्वतंत्रता ऐसा नहीं कर सकती।" लोकतंत्र को अवस्थाओं की समानता के कारण नैतिक संबंधों की आवश्यकता होती है इसलिए उसे धर्म की भी आवश्यकता है। उसने किसी धर्म की वास्तविकता को बताने के बजाय धर्म की उपयोगिता की ओर संकेत किया। धर्म पर असाधारण

बल देने का कारण यह था कि उसने फ्रांस और यूरोप के ईसाई मतावलंबी राज्यों में लोकतंत्र की स्थापना के लिए इसे महत्वपूर्ण समझा। वह इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि "धर्म की भावना" और "स्वाधीनता की भावना" के बीच विरोध होने के कारण यूरोप में लोकतंत्र असफल रहा यद्यपि कैथोलिक चर्च और फ्रांस के राजतंत्र के बीच समझौता स्वयं धर्म के लिए हानिकर था और उसकी विशेषता यह थी कि वह ईसाइयत और मृतप्रायः अभिजात-तंत्र के बीच अत्यधिक दुखद समझौता था। चर्च लोकतंत्र को धर्म का विरोधी समझती थी इसलिए वह उसे अपना शत्रु मानती थी। अमेरिका में ये दोनों परस्पर बहुत निकट से संबंधित थे। वहाँ लोकतंत्र की सफलता का वही कारण था।

अमेरिका, जो एक नवजात अतिनैतिकतावादी कॉमनवेल्थ था, ने यूरोप की अभिजातवर्गीय विरासत को अस्वीकार कर दिया और लोकतंत्र के सिद्धांतों को स्वीकार किया। अतिनैतिकतावादी (puritans) इस नए विश्व में ऐसी ईसाइयत लाए जो लोकतंत्रीय, संवैधानिक और गणराज्यीय थी। उन्होंने शासन में जनता की भागीदारी, कराधान के मामलों में स्वतंत्र मतदान, राजनीतिक प्रतिनिधियों के कार्यों के लिए जिम्मेदारी का निर्धारण, व्यक्तिगत स्वतंत्रता की रक्षा और अभिनिर्णायक (jury) द्वारा मुकदमा चलाने आदि सिद्धांतों को लागू किया। उन्होंने धार्मिक विश्वास पर आधारित स्वतंत्रता के प्रति प्यार की भावना पैदा की। इसके लिए उन्होंने अमेरिकियों को यह शिक्षा दी कि स्वतंत्रता ईश्वर की देन है इसलिए इसे गंभीरता से लेना चाहिए और इसका उपयोग समझदारी से करना चाहिए। ईसाइयत ने स्वयं को उन उदारवादी लोकतंत्रीय सिद्धांतों से संबद्ध कर लिया, जिन्हें इसने आरंभ किया था। इसलिए वह ऐसे स्वायत्त शासन की अपेक्षा कर सकता था जो स्थायी और शाश्वत हो।

टॉकविल के अनुसार ऐतिहासिक दृष्टि से लोकतंत्र का आरंभ तब हुआ जब ईसा ने असंदिग्ध रूप से सार्वभौम मानवीय समानता की घोषणा की और लोकतंत्र की प्राप्ति को संभव बनाया। इसके अतिरिक्त लोकतंत्रीय समाज में ईसाइयत की शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान था जिसमें आत्मा की अमरता के सिद्धांत को माना जाता था। धर्म मनुष्य को सिखाता है कि वह "अपने तात्कालिक स्वार्थों का" परित्याग करके शाश्वत सुख की प्राप्ति का प्रयास करे। इस प्रकार लोकतंत्र को मानने वाले व्यक्ति यह बात सीखेंगे कि केवल निजी या सार्वजनिक जीवन में निरंतर कड़ी मेहनत से कुछ स्थायी चीज़ प्राप्त हो सकती है। उन्होंने अपने जीवन का समुचित रूप से प्रबंध करने की कला सीखी। "अतीन्द्रियता और अमरता के सिद्धांतों" पर विश्वास करके उन्होंने सांसारिक के बजाय आध्यात्मिक बातों की ओर ध्यान दिया और स्वाधीनता के प्रति सहज प्यार विकसित किया। पहली नज़र में ऐसा प्रतीत होता है कि अमेरिकी राजनीति से धर्म को निष्कासित कर दिया गया है। पादरियों ने अपनी संप्रभुता को धार्मिक मामलों तक सीमित कर दिया और उन्होंने गणतंत्र के आधारभूत सिद्धांतों की समालोचना नहीं की। परंतु, वास्तव में उन्होंने उन्हें सक्रिय रूप से बढ़ावा दिया। टॉकविल ने अनुभव किया कि यदि ईसाइयत ने ऐसा आत्म-संयम प्रदर्शित नहीं किया तो इसके हाशिये में चले जाने का खतरा रहता है। अमेरिकी पादरियों ने न केवल आत्म-हित के सर्वोच्च प्राधिकार को स्वीकार किया बल्कि धर्म की सेवा के प्रति स्वार्थपूर्ण आवेश को भी उजागर किया। उन्होंने अपनी सभा में यह स्पष्ट किया कि ईसाइयत के गुण स्वाधीनता और समृद्धि के साथ मुक्ति के भी अनुकूल हैं। इस प्रकार उन्होंने मस्तिष्क और हृदय को धर्म की वेदी पर ला खड़ा किया और इस बात को बाध्यकारी बना दिया कि कोई भी राजनीतिक या सैनिक अधिकारी मानव पर पूर्ण प्राधिकार नहीं जमा सकता। यह यूरोपीय सामंतवाद के अंत का प्रमुख कारण था।

यद्यपि टॉकविल स्वयं पेशे से कैथोलिक था, उसने मैक्स बेबर (1864-1920) की तरह बाद में यह स्वीकार किया कि प्रोटेस्टेंट नीतिशास्त्र ने व्यक्तिवाद और स्वतंत्रता को बढ़ावा दिया लेकिन राजनीतिक

सत्ता को भी समुचित सम्मान दिया। साथ ही यह भी स्वीकार किया कि और अधिक सामाजिक समरूपता एवं मध्यम वर्ग के समर्थन से इस भावना का विस्तार लोकतंत्र तक हुआ। इन सभी तत्वों ने संयुक्त रूप से अमेरिका में ईसाइयत और लोकतंत्र दोनों के शांतिपूर्ण विकास में सफलता प्रदान की। अमेरिका को यह सफलता इसलिए प्राप्त हुई क्योंकि उसने चर्च और राज्य के पृथक अस्तित्व के सिद्धांत को समझ लिया। इसकी वजह से निहित धार्मिक स्वार्थों के संगठित होने पर रोक लग गई। यह बात राजनीतिक दलों और वर्गों पर विशेष रूप से लागू होती है, जैसा कि यूरोप में हुआ। अमेरिका में धर्म और लोकतंत्र का मैत्रीपूर्ण सह-अस्तित्व था। वास्तव में, धार्मिक विश्वास के अधिकार की गारंटी देकर लोकतंत्र ने धर्म के प्रसार में सहायता की। सभी धार्मिक मतों को राजनीतिक स्वतंत्रता से लाभ हुआ और इसके परिणामस्वरूप धर्म ने भी राज्य और चर्च की पृथकता का समर्थन किया।

अमेरिका में धर्म के अलावा लोकतंत्र की स्थापना में सहायक दूसरा महत्वपूर्ण तत्व स्थितियों की समानता था। दिलचस्प बात यह है कि यह विशेषता स्वयं में स्वतंत्रता का कारण नहीं थी अपितु नवीन प्रकार की निरंकुशता के अनुकूल थी जिसे लोकतंत्र द्वारा प्रवर्तित व्यक्तित्ववादी और भौतिकवादी ताकतों ने संभव बनाया था। इसके विपरीत, पुराने अभिजात वर्गों ने अपनी क्रमिक परंपरागत वर्ग संरचनाओं के साथ मनुष्यों को दृढ़ और स्थायी राजनीतिक बंधनों में बँधने के लिए प्रेरित किया तो लोकतंत्रों ने अपने समानता के सिद्धांत के साथ उन बंधनों को ढीला कर दिया। बहुत बड़ी संख्या में लोग आर्थिक दृष्टि से स्वाधीन हो जाए। परिणामस्वरूप उन्होंने इस गलत धारणा को मान लिया कि वे अपने भाग्य के पूर्ण विधाता हैं। स्वाधीनता की इस मिथ्या धारणा ने, अभिजात वर्ग द्वारा मूल स्वार्थ के रूप में विकसित दायित्व के भावों को परिवर्तित कर दिया।

धर्म ही इस अधःपतन को रोककर लोकतंत्र के रक्षक के रूप में उभर कर सामने आया। टॉकविल ने स्वीकार किया कि धर्म व्यक्तित्ववाद की संपूर्ण प्रवृत्ति और कल्याण की खोज को रोकने में शायद समर्थ न हो। लेकिन धर्म ही उसे संतुलित और शिक्षित करने का एकमात्र उपाय है। उसने धर्म को संयत व्यक्तित्ववाद के संपोषक के रूप में देखा, जो लोकतंत्र की सफलता और भौतिक समृद्धि के लिए आवश्यक है। धर्म को मानव की स्वतंत्रता का विरोधी मानने की बजाय जैसा कि कार्ल मार्क्स (1818-83) ने समझा, टॉकविल ने अनुभव किया कि इसके लिए धर्म और लोकतंत्र का सुखद मिश्रण संभव और अभीष्ट है।

टॉकविल की यह सुनिश्चित धारणा थी कि लोकतंत्र संवैधानिक व्यवस्थाओं या कानूनों पर आधारित नहीं है लेकिन वह समाज के लोकाचार पर आधारित है। जो समाज धर्म द्वारा संभव बनाई गई आदतों और अभिमतों को स्वीकार करता है उसके मन में मनुष्य मात्र के प्रति नैतिकता की भावना रहती है। किसी राजनीतिक नियंत्रण के अभाव में किसी स्वतंत्र समाज के लिए यह ज़रूरी है। यही अमेरिकी धर्म की सफलता का मूलमंत्र है। इसके विपरीत, यूरोप में मानवीय स्वतंत्रता के समर्थकों ने धार्मिक अभिमतों पर आक्रमण किया और उन्होंने यह समझने की कोशिश नहीं की कि धार्मिक विश्वास के बिना तानाशाही से बच पाना और स्वतंत्रता पाना संभव नहीं है। धार्मिक विश्वास के नष्ट हो जाने के कारण आत्म-नियंत्रण के अभाव में फ्रांसीसी क्रांति के बाद सर्वत्र आतंक का बोलबाला हो गया। धर्म के अभाव में सभी आधुनिक लोकतंत्रों के भाग्य में नास्तिकता और आतंक का साम्राज्य होगा।

सफल राजनीतिक लोकतंत्र की नींव नैतिक संस्थाओं पर होनी चाहिए, जिसका अभिप्राय धार्मिक विश्वास से है। लोकतंत्रीय प्रक्रिया के प्रेरक तत्व और समाज के साथ इसकी अंतर्क्रिया सामान्य रूप से धर्म द्वारा पोषित इसके धर्मवैज्ञानिक विचारों और बाहरी अभिवृत्ति को कम कर देते हैं। लोकतंत्रीय

जीवन को अपनाने का मतलब यह है कि धर्म के मानव कल्याण और समृद्धि के दर्शन को स्वीकार करना होगा। इसके बदले धर्म अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए ईमानदारीपूर्ण साधनों पर बल देकर उसे पवित्र और विनियमित करता है। धर्म का सबसे बड़ा लाभ संयम और आत्म-नियंत्रण है। अमेरिका में लोकतंत्र और धर्म का अच्छी प्रकार से संतुलन और इसकी अबाध सफलता की तुलना धर्म-विरोधी साम्यवाद की पूर्ण विफलता से की जा सकती है। इससे टॉकविल के विश्लेषण की विश्वसनीयता सिद्ध होती है।

12.4 नारी और परिवार

टॉकविल ने मैरी वोलस्टोनक्राफ्ट (1759-97) की तरह माता-पिता द्वारा निर्धारित विवाह संस्था की आलोचना की और कहा कि यह स्वच्छंद यौन नैतिकता को बढ़ावा देता है और इस प्रकार यह व्यक्ति की निजी स्वतंत्रता में बाधक है। वह फ्रांसीसी क्रांति का भी आलोचक था जिसने देश के राजनीतिक जीवन का लोकतंत्रीकरण कर दिया होता लेकिन वह स्वाधीनता की संस्कृति के सृजन में असफल रहा। वह अमेरिका में यौन नैतिकता के उच्च स्तर से प्रभावित हुआ जिसे वहाँ व्यक्ति का निजी मामला माना जाता है और जिसे राजनीतिक परंपरा के बजाय धर्म यानी ईसाइयत का समर्थन प्राप्त था। ईसाइयत के नीतिशास्त्र में निर्धारित यौन आचार संहिता में, जिसमें विवाहेतर कुँआरापन शामिल है, विवाह के बाद संयमपूर्ण जीवन, पारस्परिक विश्वास और सभी प्रकार के विवाहेतर संबंधों से सख्ती से बचने के निर्देश हैं। धर्म के अतिरिक्त जातीय गठन, जलवायु, सामाजिक स्थितियाँ, राजनीतिक समझ आदि अन्य कारकों की भी महत्वपूर्ण भूमिका है। अमेरिका में विवाह का निर्धारण माता-पिता द्वारा नहीं किया जाता। इसलिए स्त्रियाँ आपसी आदर और प्रेम के आधार पर निजी प्रसन्नता और यौन संबंधों का उपभोग करती हैं। विवाह संबंधों में स्वतंत्रता के कारण संबंधों में उच्च स्तर की पवित्रता की अपेक्षा की जाती है।

टॉकविल के अनुसार अमेरिकी लोग अपनी स्त्रियों पर उनके माता-पिता के रूप में अधिकार जताने के बजाय उन्हें स्वतंत्रता देकर शिक्षा प्राप्त करने का अवसर देते हैं। वे वैवाहिक पवित्रता को महत्वपूर्ण मानते हैं क्योंकि इससे स्वस्थ वाणिज्यिक स्वभाव को बढ़ावा मिलता है, परिवार उत्पादक कार्यों में भाग लेते हैं। इससे राजनीतिक स्थिरता बनाए रखने में सहायता मिलती है जो समृद्धि का आधार है। इसलिए यहाँ पवित्रता केवल धर्म पर आधारित नहीं है अपितु इसका उद्गम धर्मनिरपेक्ष स्रोतों से भी हुआ है। यूरोप की स्त्रियों पर यह बात लागू नहीं होती। फिर भी उन्हें अपने पतियों के साथ अभूतपूर्व समानता का व्यवहार मिलता है क्योंकि वहाँ विवाह-संबंध दो परिपक्व, नैतिक दृष्टि से जिम्मेदार और स्वतंत्र वयस्कों के बीच एक अनुबंध है। टॉकविल ने देखा कि औपचारिक राजनीतिक शक्ति के अभाव के बावजूद अमेरिकी स्त्रियाँ अमेरिका की स्वतंत्रता और समृद्धि में योगदान करने में समर्थ हैं क्योंकि उन्हें व्यक्तिगत जीवन में स्वतंत्रता और सम्मान प्राप्त है।

अमेरिका में व्यभिचार और महिलाओं के प्रति अपराधों का अभाव था। सन् 1830 के दशक में महिलाएँ निर्भय होकर अकेले लंबी दूरी की यात्रा कर सकती थीं। पुरुष भी यौन नैतिकता का पालन करते थे। इसका कारण कुछ हद तक वैवाहिक स्वतंत्रता थी तो कुछ अंशों में इसे जनता द्वारा अभिव्यक्त राय द्वारा प्रतिबंधित कह सकते हैं। इसके अतिरिक्त इसका कुछ कारण उनकी धन कमाने की महत्वाकांक्षा थी जो उन्हें व्यावहारिक, काम-वासना मुक्त और व्यस्त बना देती है। टॉकविल ने वहाँ वेश्यावृत्ति के चलन को दुखद तो कहा लेकिन पुरुषों की कामुकता को ध्यान में रखते हुए इसे बुद्धिमत्तापूर्ण रियायत माना।

12.5 उपसंहार

टॉकविल का केंद्रीय मुद्दा यह था कि वह जानना चाहता था कि वे कौन-सी ऐसी ताकतें थीं जिन्होंने अमेरिका में लोकतंत्रीय व्यवस्था स्थापित की और किस प्रकार फ्रांस में क्रांति को रोकने के तरीके खोजे जाएँ। उसका राजनीति का विश्लेषण समाजशास्त्रीय ढाँचे के अंतर्गत था। उसने अपने ध्यान को जनता की संस्कृति, आचार-व्यवहार और आदतों पर केंद्रित किया। उसने सामाजिक स्तरीकरण, जातीय संबंधों, गुलामी प्रथा, उपनिवेशवाद, समुदायों, स्वैच्छिक संघों, नौकरशाही व्यवस्था, सेनाओं, भाषा, साहित्य, कला, धर्म, कारागारों और अपराधों के बारे में भी लिखा। अपनी युक्तियों में तुलनात्मक पद्धति का व्यापक रूप से प्रयोग करते हुए उसने अमेरिका में लोकतंत्रीय संस्थाओं की सफलता के मूल कारणों, भौगोलिक परिस्थितियों के ऊपर कानूनों के महत्व और अंततः कानूनों के ऊपर रीति-रिवाजों के महत्व की व्याख्या की। आरंभ में उसने अमेरिकी और भौगोलिक दृष्टि से समान लेकिन सामाजिक तथा राजनीतिक दृष्टि से भिन्न लैटिन अमेरिकी और फ्रांसीसी-कनाडाई समाजों की तुलना की। इसके बाद उसने अपनी तुलनात्मक व्याख्या का विस्तार संघ के पूर्वी राज्यों और पश्चिम के सीमा क्षेत्रीय राज्यों तक कर दिया जहाँ यद्यपि कानून तो वही थे लेकिन लोकतंत्रीय व्यवहार उतना सुस्थापित नहीं था।

टॉकविल ने फ्रांस को ध्यान में रखते हुए लिखा क्योंकि फ्रांसीसियों ने पहले ही समानता की इच्छा के बदले अपनी स्वतंत्रता का बलिदान करने की अभिरुचि प्रदर्शित की थी। उसने अमेरिका को एक बहुलवादी, प्रांतीयतावादी, स्वैच्छिक संस्थाओं के प्रति स्वतः सहायक और उत्सुकतापूर्ण देश के रूप में चित्रित किया। उसने भौतिक सफलता के प्रति अमेरिका के बढ़ते रुझान और जनमत द्वारा समेकीकृत राजनीतिक क्षेत्र को भूलकर उससे संबंधित "कोमल" तानाशाही के उदय की आशंका के प्रति चिंता व्यक्त की। उसने सामाजिक समानता और लोकतंत्र के नाम पर वैयक्तिकता को जिस खतरे का सामना करना पड़ रहा है, उसे भी समझा। यह ऐसा विषय थ जिसे जॉन स्टुअर्ट मिल ने बाद में स्पष्ट रूप में विकसित किया। उसने "पवित्र माने जाने वाली" स्वतंत्रता को लोकतंत्र से उत्पन्न खतरे को भी समझा। उसने इस बात पर भी ज़ोर दिया कि "स्थितियों की समानता के कारण उत्पन्न होने वाली बुराइयों को केवल राजनीतिक स्वतंत्रता से ही दूर किया जा सकता है। उसने आशावादिता से उस समानता को स्वीकार कर लिया और अपनी आशंकाओं के बावजूद लोकतंत्र द्वारा आश्वस्त राजनीतिक स्वतंत्रता को स्वीकार कर लिया।" (मैन्सफील्ड एंड विनथ्रॉप 2000 : xxxvi) उसने लोकतंत्र के दो अर्थ समझे। राजनीतिक दृष्टि से इसका मतलब विस्तारित मताधिकार पर आधारित प्रतिनिधि संस्थाओं से है, लेकिन इससे भी अधिक महत्वपूर्ण आशय सामाजिक स्तर पर समानता की या सामाजिक लोकतंत्र की स्वीकृति से है। लोकतंत्र से समान सामाजिक स्थितियों को प्रोत्साहन मिलता है और यह अभिजात-तंत्र और तानाशाही से भिन्न है। उसने डाल (Dahl) एवं उसके सहयोगियों द्वारा लोकप्रिय बनाए गए लोकतंत्र के वर्तमान बहुलतावादी सिद्धांतों का पूर्वानुमान लगा लिया था। वह समझ सकता था कि अमेरिकी राजनीतिक पद्धति की शक्ति का स्रोत संवैधानिक व्यवस्था और स्थानीय सरकारों की परंपरा से तथा लोगों द्वारा निर्मित मध्यस्थता करने वाली संस्थाएँ हैं। यह ऐसा विषय है जिसे नव-रूढ़िवादियों ने बार-बार प्रतिपादित किया। टॉकविल लोकतंत्र के सामाजिक मूल कारणों का विश्लेषण करने वालों में अग्रणी था क्योंकि उसने समान विश्वासों और सामाजिक संबंधों के तंत्र के महत्व पर बल दिया था। यह ऐसा विषय था जिसे आधुनिक उदारवाद के समुदायवादी आलोचकों ने पुनरुज्जीवित किया।

टॉकविल ने लोकतंत्रीय समाज के आधार के रूप में व्यक्तिवाद के दो पहलुओं की विशिष्टताओं का उल्लेख किया। ये पहलू थे - किसी राय के एकमात्र आधार के रूप में व्यक्तिपरक तर्क पर विश्वास और अपने व्यक्तिगत लाभ के लिए आत्मकेंद्रित और स्वार्थपरक प्रयास में विश्वास। उसने बौद्धिक संपदा के प्राकृतिक लोकतंत्रीय अधिकार के विरुद्ध व्यक्ति द्वारा विद्रोह करने के अधिकार का समर्थन किया। लोकतंत्रीय व्यक्तिवाद का दूसरा पहलू सार्वजनिक क्षेत्र से पीछे हटना और परिवार के भौतिक कल्याण की ओर ध्यान केंद्रित करना उनका मुख्य लक्ष्य था। इससे व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा और प्रतियोगिता की प्रवृत्ति में और अधिक वृद्धि होने की संभावना है। समानता के अवसरों पर आधारित समाज में जन्म की अलाभकर स्थिति से प्रभावित हुए बिना इस लक्ष्य को पाना संभव था। इसके फलस्वरूप प्रतियोगिता के और अधिक तीव्र तथा कटु होने की संभावना है। जो सफल हुए उनके प्रति नाराजगी प्रकट की गई क्योंकि इसमें असमान योग्यता दिखाई दी। टॉकविल के अनुसार मध्यम वर्ग में भौतिक सुरक्षा की इच्छा स्वाभाविक थी। राजनीतिक स्तर पर भौतिक सुख-साधनों को पाने की इच्छा से व्यक्तिगत स्वतंत्रता के खतरे की संभावना होती है जिससे रूपतावाद (conformism) और बहुसंख्यक वर्ग के अभिमत की तानाशाही को बढ़ावा मिलता है। जिस समाज में सभी समान होते हैं वहाँ प्रत्येक व्यक्ति यह अनुभव करता है कि वह दूसरों के समान है इसलिए वह स्वयं को शक्तिहीन समझता है। कोई भी व्यक्ति यह दावा नहीं कर सकता कि सच्चाई पर उसका एकमात्र अधिकार है क्योंकि बहुमत हमेशा सही होता है। इससे अनुरूपतावाद को बढ़ावा मिलता है क्योंकि जो लोग असहमत होते हैं उनका यह विश्वास हो जाता है उसकी स्थिति गलत होनी चाहिए। अनुरूपतावाद के कारण व्यक्ति की स्वायत्तता में कमी हो जाती है और राज्य की शक्ति में वृद्धि हो जाती है। राज्य की शक्ति के विस्तार का पहला शिकार बिचौलियों की समाप्ति होती है जो व्यक्ति और राज्य के बीच में कार्यरत होते हैं। व्यक्तियों की अधिकाधिक चिंता का कारण निजी लाभ होते हैं और वे सार्वजनिक दायित्वों के प्रति उदासीन होते हैं। इस प्रकार राजनीति का क्षेत्र राजनीतिज्ञों के लिए बचा रहता है। इन सबका परिणाम समाज का अणुकरण (atomisation) होता जिसमें राज्य को मुख्य सामाजिक संगठन समझा जाता है। इससे एक नई प्रकार की तानाशाही का जन्म होता है जहाँ व्यक्ति कुछ सीमा तक हितकर हस्तक्षेप की अनुमति देते हैं और उसे स्वीकार कर लेते हैं क्योंकि वे आम राय से भयभीत होते हैं। इससे व्यक्तिगत स्वतंत्रता कमजोर होती है। टॉकविल का सुझाव था कि प्रतिनिधि संस्थाओं, स्वतंत्र राजनीतिक दलों और स्वतंत्र संचार माध्यमों से राजनीतिक लोकतंत्र को मज़बूत बनाया जाए। इस कारण उसने स्वयं को एक नए प्रकार का उदारवादी कहा।

अमेरिका में जब से पूर्वज तीर्थ यात्री (pilgrim fathers) आकर बसे तब से यूरोप के राजनीतिक विचारकों का ध्यान नए विश्व की ओर आकर्षित हुआ। उदाहरण के तौर पर, यदि अमेरिका की खोज न हुई होती तो लॉक के इच्छा स्वतंत्रतावादियों के उदारवाद की कल्पना भी संभव न होती। टॉकविल की महत्ता इसी बात में है कि उसने विश्व के किसी भी स्थान पर लोकतंत्रीय व्यवस्था को मज़बूत बनाने के लिए आवश्यक सामाजिक कारकों का प्रभावशाली ढंग से विश्लेषण किया। इसी सर्वमुक्तिवादी (universalistic) प्रतिमान के कारण अमेरिका में लोकतंत्र न केवल विश्व में प्रथम लोकतंत्र का दृढ़ीकृत रूप था अपितु वह आधुनिक लोकतंत्रीय व्यवस्था के सैद्धांतिक और व्यावहारिक, दोनों पक्षों की प्रकृति को समझने के लिए आवश्यक प्रवेशिका है।

12.6 सारांश

एलेक्सिस डि टॉकविल पर अभिजातवर्गीय उदारवादी या उदार-रूढ़िवादी होने का ठप्पा लगा दिया गया है। उसका स्वतंत्रता और संपत्ति की सुरक्षा के अधिकारों के प्रति उत्साह टॉकविल की उदारवादी

प्रवृत्तियों का प्रतिनिधित्व करता है। लेकिन उसने लोकतंत्र की अधिकता के खतरों के प्रति भी सावधान किया। उसने क्रांति को नापंसद किया, लेकिन इस विषय में बहुत संतुलित विचार प्रस्तुत किए क्योंकि क्रांति से स्वतंत्रता स्थापित होती है। परंतु लगातार होने वाली कई क्रांतियों से सुव्यवस्थित स्वतंत्रता असंभव हो जाती है। उसने फ्रांसीसी क्रांति के आतंक और निरंकुशता को नापसंद किया लेकिन उसने स्वाधीनता और समानता के प्रति प्रतिबद्धता का समर्थन किया।

वह लोकतंत्र के विस्तार के बारे में सावधान था क्योंकि किसी लोकतंत्रीय समाज में स्वाभाविक नेताओं का अभाव पाया जाता है। व्यक्ति विशेषाधिकारों के बजाय हितों के आधार पर पदों के लिए संघर्ष करेंगे। उसने समानता के सिद्धांत में निहित तानाशाही प्रवृत्तियों को अवरुद्ध करने के लिए स्वतंत्र और भागीदारी की राजनीतिक संस्थाओं को बढ़ावा देना आवश्यक समझा। उसने केंद्रीय प्राधिकार के मनमाने हस्तक्षेप को रोकने के लिए सशक्त स्थानीय संस्थाओं की आवश्यकता को उचित माना। टॉकविल के अनुसार धर्म एक "राजनीतिक संस्था" है और वह लोकतंत्रीय समाज में स्वतंत्रता के संरक्षण, विशेष रूप से अवस्थाओं की समानता द्वारा प्रवर्तित तानाशाही प्रवृत्तियों से संरक्षण, के लिए महत्वपूर्ण है। अवस्थाओं की समानता के कारण लोकतंत्र को नैतिक बंधनों की और इस कारण से धर्म की आवश्यकता है।

उसने माता-पिता द्वारा विवाह-संबंध निर्धारित करने की संस्था पर आक्रमण किया क्योंकि यह स्वच्छंद यौन संबंधों को बढ़ावा देती है। इसके द्वारा व्यक्ति की निजी स्वतंत्रता का महत्व कम होता है। उसके विचार में अमेरिकियों द्वारा जिस प्रकार की वैवाहिक स्वतंत्रता का आचरण किया जाता है उसके द्वारा उच्च स्तर की यौन पवित्रता सुनिश्चित होती है। टॉकविल के विचार के मुख्य विषय थे - उन ताकतों को समझना जिन्होंने अमेरिका में लोकतंत्रीय व्यवस्था का सृजन किया; और फ्रांस में क्रांति को रोकने के तरीकों की खोज करना।

12.7 अभ्यास

1. लोकतंत्र, क्रांति और आधुनिक राज्य के बारे में टॉकविल के विचारों की चर्चा कीजिए।
2. टॉकविल के अनुसार राजनीति में धर्म की क्या भूमिका होती है?
3. टॉकविल ने माता-पिता द्वारा निर्धारित किए जाने वाले विवाह-संबंधों की क्यों आलोचना की?